ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 35 बुलेटिन अवधिः 3–7 मई, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 2 मई, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल**				
	03–05–2017	**04–05–2017**	**05–05–2017**	**06–05–2017**	**07–05–2017**
वर्षा (मिमी0)	0	3	5	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	26	25	24	25	26
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	14	15	14	14	14
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	घने बादल	घने बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	85	90	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	50	55	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	06	06	10	08	08
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (25 **अप्रैल** से **1 मई** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ आंशिक बादल छाये रहे व 13.6 मि0मी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 19.0 से 26.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 7.6 से 10.8 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य शीघ्र पूर्ण करें।
- गेहूँ की मढ़ाई के बाद धान की बुवाई के लिए गहरी जुताई एवं मेड़बन्दी करे।
- शरद एवं बसंतकालीन गन्ने की सिंचाई, खरपतवार एवं पोषक तत्वो का प्रबन्धन ठीक प्रकार से करे।
- चारा फसलो में सिंचाई के उपरान्त नत्रजन का प्रयोग करे जिससे अत्यधिक चारा प्रयोग किया जा सके।
- बसंतकालीन गन्ने में खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के तीन दिन के अंदर या 15–20 दिन पर 2–3 पत्ति अवस्था में वैलपार के–4 की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- गन्ने में निराई–गुड़ाई के उपरांत सिंचाई के बाद नत्रजन का प्रयोग करें।
- चारा फसलों में सिंचाई का प्रबंध करें।
- बसंतकालीन गन्ने में कल्ले निकलने की अवस्था में गुड़ाई करने के एक हफ्ते बाद सिंचाई करें एवं मैट्रीब्यूजीन/एट्राजीन की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा नत्रजन की बची हुई 1/3 मात्रा का प्रयोग करें व खरपतवारों का नियंत्रण करें।

उद्यान प्रबन्धः

- यदि प्याज व लहसुन की फसल तैयार हो गयी है तथा इनकी पत्तिया जमीन की सतह पर गिरनी प्रारंभ हो गई हों तो फसल में सिंचाई करना बंद करें तथा आने वाले 15–20 दिनों में फसल की खुदाई करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में यदि टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च की पौध का प्रतिरोपण 1 माह पूर्व हो गया हो तो यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें साथ ही साथ नमी संरक्षण के उपाय सुनिश्चित करें।
- मध्यम ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में तैयार मटर की फसल की तुड़ाई करे।
- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में आलू की फसल में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग के पश्चात् मिट्टी चढ़ायें तथा नमी संरक्षण हेतु कार्बनिक पलवार पदार्थ का प्रयोग करें। ध्यान रहे पलवार पदार्थ की मोटाई कम से कम 8–10 से0मी0 हो।
- मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में यदि राई, बंदगोभी, फूलगोभी या मूली की बीज वाली खड़ी फसल है तो ओले से बचाव हेतु नाइलोन जाली का प्रयोग करें।
- कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियो को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फॅफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियत्रंण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी की फसल में पत्तियों की नसे यदि पीली पड़ रही हो तो ऐसे पौधो को निकालकर नष्ट कर दे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण के लिए किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- प्याज में यदि ऊपर से पत्तियाँ पीली पड़ रही हो तो नियंत्रण हेतु डिफीनोकोनाजोल का 1 मि0ली0/लीटर + फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एस सी 1 लीटर प्रति हैक्टेयर एवं स्टीकर 0.5 मिली0 प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियो पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- आम की फसल में चूर्णि फॅफूदी की नियत्रंण हेतु कार्बनडाजिम का 0.1प्रतिशत का घोल का छिड़काव करें।
- फल अच्छादन होने के उपरान्त मैंगो हौपर के प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोरपिड का 3 मि0ली0 /10लीटर के हिसाब से आम में छिड़काव करें।
- आड़ू, प्लम, खुमानी आदि गुठलीदार फलों में फल अच्छादन हो गया है तो पेड़ों को ओलो से बचाने के लिए जहाँ तक संभव हो ओला अवरोधी जालियों का प्रयोग करें।
- ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में एप्पल स्कैब रोग के नियंत्रण के लिए आवश्यक छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियो में मेलाथियॉन अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयो8 का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नही कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायो का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियो से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतू शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।
- अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।
- पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
- गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।

❖ अप्रैल माह से भैंसों को पशुशाला में सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक रखना चाहिए, जिससे उन्हें तेज धूप से बचाया जा सके।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर